नवभारत टाइम्स (दिल्ली)
31-10-1989

और अब 'कुरआनिक वर्सेस'

सल्मान रुश्दी की विवादास्पद किताब 'सैटॉनिक वर्सेस' को लेकर मुस्लिम जगत में जो हंगामा खड़ा हुआ है उससे हम सभी परिचित हैं। पैगम्बर मुहम्मद साहब के बारे में सल्मान रुश्दी ने जो अशोभनीय टिप्पणियां की हैं उससे मुस्लिम बड़े आहत हुए और मरहूम आयतुल्लाह रुहेल्लाह खुमैनी तो इतने बौखलाए कि रुश्दी को जान से मार डालने का फतवा जारी कर डाला। खुमैनी के इंतकाल के बाद भी ईरान के कट्टरपंथी मुसलमानों ने वह फतवा बरकरार रखा है और बाकी मुस्लिम देशों के मन में तो खुंदक है ही, क्योंकि ब्रिटेन ने सल्मान रुश्दी को छिपकर रहने के लिए पूरी सुरक्षा दे रखी है।

महाराष्ट्र के कांग्रेस (इ) नेता और भूतपूर्व सांसद डॉ रफीक जकरिया ने मुस्लिम जगत का जख्म भरने की कोशिश की है। 'सैटॉनिक वर्सेस के जवाब में उन्होंने 'कुरानिक वर्सेस' लिखी और पेंग्विन से संपर्क किया। पेंग्विन ब्रिटेन का ही प्रकाशक है जिसने सल्मान रुश्दी की किताब प्रकाशित की है और अब 'कुरानिक वर्सेस' छापने के विषय में गंभीरतापूर्वक विचार कर रहा है। 'सैटॉनिक वर्सेस' की वजह से पेंग्विन की भी बड़ी फजीहत हुई है। तमाम मुस्लिम देशों में पेंग्विन की किताबों का बहिष्कार किया गया, पेंग्विन बुक स्टॉलों को जबरदस्ती बंद कर दिया गया और पेंग्विन द्वारा प्रकाशित किताबों की बिक्री पर रोक लगा दी गई। इतना ही नहीं, संसार भर के प्रमुख मुस्लिम नेताओं ने एक ही साथ सल्मान रुश्दी और पेंग्विन के संपादक पीटर कार्सन को सार्वजनिक रूप से माफी मांगने को कहा। जब दोनों ने इनकार कर दिया तो मुस्लिम नेताओं ने ब्रिटेन सरकार से पेंग्विन प्रकाशन पर प्रतिबंध लगाने का आग्रह किया।

पेंग्विन प्रकाशक के एक प्रवक्ता ने लंदन के अखबार 'ऑब्जर्वर' को बताया कि डॉ रफीक जकरिया बड़े चोटी के लेखक हैं और पीटर कार्सन 'कुरानिक वर्सेस' की विनॉप्सिस पर उसकी गुणवत्ता की वजह से गंभीरतापूर्वक विचार कर रहे हैं, न कि मुस्लिम जगत से डर के।

डॉ जकरिया की एक किताब 'द स्ट्रगल विदिन इस्लाम' हाल ही में पेंग्विन ने प्रकाशित की है जिसमें राजनीति और धर्म के विवादास्पद पहलुओं का जिक्र है। इसमें उन्होंने मुस्लिम प्रकाशकों द्वारा इस्लाम की आड़ में प्रशानिक निरंकुशता को इस पवित्र धर्म के लिए धब्बा बताया है और मुस्लिम भाईचारे की भावना को तजरीह देते हुए मुस्लिम देशों में गैर-मुस्लिमों के साथ हो रहे सुलूक का नजदीक से जायजा प्रस्तुत किया है।

पेंग्विन द्वारा 'कुरानिक वर्सेस' प्रकाशनार्थ ले लिए जाने से डॉ जकरिया खुश हैं। उन्होंने कहा कि सल्मान रुश्दी द्वारा चोट पहुंचानेवाली भाषा का इस्तेमाल करने से मुस्लिम भाइयों की धार्मिक भावना को जो ठेस पहुंची है उससे थोड़ी राहत देने की कोशिश इसमें की गई है। उन्होंने इस किताब में 'कुरआन' के सभी अध्यायों से तथ्य शामिल किए हैं--खासकर उनके लिए जो इस्लाम के बारे में नहीं जानते।

उधर ब्रिटेन में सल्मान रुश्दी को लेकर राजनीतिक संकट खड़ा हो गया है। ब्रेडफोर्ड स्थित अल-मुजाहिद गुट के अध्यक्ष अब्दुल कुद्दुस ने पिछले दिनों कह दिया कि वे ऐसे देश में नहीं रह सकते, जहां सल्मान रुश्दी जैसा काफिर अपने विचार व्यक्त करने के लिए स्वतंत्र हो। यह बात ब्रिडिंग्टन के टोरी सांसद जॉन टॉनेनड को बड़ी नागवार गुजरी और उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा-'अगर मुस्लिमों को सल्मान रुश्दी और उसकी किताब से नफरत है तो फिर वे ब्रिटेन छोड़ दें और जहां से आए हैं वहीं वापस चले जाएं। इंग्लैण्ड अंग्रेजों के लिए है।' जॉन टॉनेनड ने यह वक्तव्य ठीक उसी समय दिया जब ब्रेडफोर्ड में मुस्लिम-विरोधी जुलूस निकालने की तैयारी हो रही थी। इसलिए मुस्लिम नेता और भी उत्तेजित हो गए और उन्होंने सरकार के पास गुहार की। कंजर्वेटिव पार्टी के अध्यक्ष केनेथ बेकर, आप्रवासी मंत्री टिम रेंटन और पैट वॉल समेत लेबर पार्टी के कई सांसदें ने जॉन टॉनेन्ड को बुरा-भला कहा, तब जाकर अब्दुल कुद्दुस शांत हुए। ये पहले मुस्लिम नेता हैं जिन्होंने 'सैटॉनिक वर्सेस' की प्रति सार्वजनिक रूप से जलाई।

काफी दिनों से कड़े पहरे में छुपछुप कर जिंदगी जी रहे सल्मान रुश्दी ऊब महसूस कर रहे हैं और ब्रिटेन की सरकार भी अब सोचने लग गई है कि उन्हें सुरक्षा देकर मुस्लिम समाज का विरोध और मोल लिया जाए अथवा नहीं। सल्मान रुश्दी की पत्नी लेखिका मरिएन विगिन्स ने तो आखिरकार उनका साथ छोड़ ही दिया। तकरीबन सात महीने से हो गए, जब मरिएन यह कहकर उनसे अलग रह रही हैं कि वे इस तरह छिपकर नहीं रह सकती।

ब्रिटेन के मुस्लिम नेता इस बात से बड़े खुश हैं। अब्दुल कुद्दूस ने इसे पैगम्बर की ओर से दी गई सजा बताया है। उनका कहना है कि ऐसी कोई जगह नहीं है जहां सल्मान रुश्दी छिपें, इसलिए, वे सामने आकर अपने किए पर अफसोस जाहिर करें और माफी मांगें-वैसे भी उनकी जान तो खतरे में है ही।

-शशिधर खां